

ISSN 2581 - 8163

ANVEEKSHA RESEARCH JOURNAL OF SSKGDC



VOL. 3, ISSUE 3, 2020



**SADANLAL SANWALDAS KHANNA GIRLS'
DEGREE COLLEGE, PRAYAGRAJ**

(A Constituent College of University of Allahabad)

ANVEEKSHA RESEARCH JOURNAL OF SSKGDC

अनुक्रम

क्र.सं. शीर्षक	लेखक	पृष्ठ सं.
1. From the desk of the Editor	Prof. Lalima Singh	1
2. अन्वीक्षा-अन्तर्दृष्टि	डॉ० रीता चौहान	3
3. दार्शनिकता की अवधारणा	प्रो० रमेश चन्द्र सिन्हा	4
4. फ़िराक की शायरी में औरत के रूप	प्रो० अली अहमद फ़ातमी	16
5. A Philosophical Discourse on Covid-19 Corona Virus Pandemic	Dr. Hari Shankar Upadhyaya	21
6. झाँसी में स्वतंत्रता संघर्ष (1858-1942)	प्रो० बी.के. श्रीवास्तव	26
7. खबरों के कवि गजानन माधव मुक्तिबोध	डॉ० धनंजय चोपड़ा	36
8. वेद और आधुनिक जीवन	डॉ० लक्ष्मीकान्त पाण्डेय	41
9. भारतीय सामाजिक व्यवस्था में वैश्य समुदाय की स्थिति का आलोचनात्मक विश्लेषण (द्वितीय नगरीकरण एवं बौद्ध साहित्य के विशेष परिप्रेक्ष्य में)	डॉ० प्रदीप कुमार केसरवानी	45
10. संस्कृत साहित्य में अंक विज्ञान	डॉ० ओम प्रकाश लाल श्रीवास्तव	60
11. भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए क्रिप्टोकॉरेन्सी का आलोचनात्मक मूल्यांकन	डॉ० राजेश केसरी	64
12. बस्तर की शिल्पकला में गणेश प्रतिमा का स्थान (बड़े डोंगर के विशेष संदर्भ में)	डॉ० नितेश कुमार मिश्र ढालसिंह देवांगन भेनू ठाकुर	68
13. प्राचीन अभिलेखों में वर्णित यज्ञ : धर्मग्रन्थ के संदर्भ में	डॉ० सत्यप्रकाश श्रीवास्तव	77
14. संस्कृत वाङ्मय में वर्णित शब्दकोश-मूल्यों की वर्तमान में प्रासंगिकता	सपना विश्वकर्मा	81

झाँसी में स्वतंत्रता संघर्ष (1858-1942)

प्रो. बी.के. श्रीवास्तव
अध्यक्ष, इतिहास विभाग,
डा. हरीसिंह गौर केन्द्रीय
विश्वविद्यालय, सागर

1857 की क्रांति ने झाँसी एवं वहाँ की रानी लक्ष्मीबाई के नाम को राष्ट्रीय इतिहास की मुख्यधारा में ला दिया। रानी लक्ष्मीबाई ने जमकर अंग्रेजों से लोहा लिया। ब्रिटिश सरकार ने जब रानी की लोकप्रियता एवं बुन्देलखण्ड में क्रांति की तीव्रता को देखा तो उन्होंने अपना सबसे योग्य सेना नायक इसी क्रांति का दमन करने हेतु भेजने का निश्चय किया। 1854-56 के कीमिया युद्ध में ब्रिगेडियर जनरल ह्यूरोज ने अत्यन्त बहादुरी का परिचय दिया था। इस बहादुरी के पुरस्कार स्वरूप उसे मेजर जनरल एवं के.सी.बी. के पदक से सम्मानित किया गया था।¹ उसकी योग्यता एवं बहादुरी को देखते हुए उसे भारत भेजा गया। 17 दिसम्बर 1857 को इन्दौर आकर उसने मध्यभारत की सेना की कमान संभाली।² महू में रुककर ह्यूरोज ने बुन्देलखण्ड में क्रांति के दमन की तैयारियाँ पूर्ण की।³ ब्रिटिश इतिहासकार जॉन स्मिथ ने अपनी पुस्तक 'दी रिवेलियस रानी' में ब्रिगेडियर जनरल का महू से झाँसी तक आने के अभियान मार्ग का मानचित्र दिया है।⁴ क्रांतिकारियों के डर से सागर के किले में 370 अंग्रेज शरण लिये हुए थे। किले को चारों ओर से क्रांतिकारियों ने घेर रखा था। इस संबंध में ह्यूरोज ने लिखा है— 'मेरी सबसे बड़ी चिंता और व्यग्रता तो यही है कि सागर को विद्रोहियों के चंगुल से कैसे मुक्त किया जाये। इस किले में छोटी से बड़ी तक महिलायें और बच्चे बंद हैं। अभी तक किले पर जैसे तैसे अंग्रेजों का कब्जा बना हुआ है।'⁵

ह्यूरोज महू से सीहोर आया। 16 जनवरी 1858 को सीहोर से सागर की ओर प्रस्थान किया। अंग्रेजों की मित्र भोपाल की बेगम ने उसकी सहायतार्थ उसे अपने 600 सिपाही दिये।⁶ ह्यूरोज को रोकने के लिए राहतगढ़ में, शाहगढ़ राजा बखतवली, बानपुर राजा मर्दन सिंह, मंदसौर का शहजादा फिरोज शाह, गढ़ी अम्बापानी के नबाव बन्धु आदिल मोहम्मद खॉ एवं फाजिल मोहम्मद खॉ मोर्चा जमाये हुए थे।⁷ राहतगढ़ के महत्व को ह्यूरोज भी जानता था। उसने लिखा था — 'सीहोर से एक सौ मील तथा सागर से 25 मील दक्षिण-पश्चिम स्थित राहतगढ़ की गढ़ी शक्ति का एक पारम्परिक स्थान है। यह सागर की पश्चिमी सीमा और बुन्देलखण्ड की कुंजी है।'⁸

राहतगढ़ के सामरिक महत्व को भारतीय क्रांतिकारी एवं ब्रिटिश अधिकारी सभी जानते